रात्रि क्लास 8-12-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

तुम अपने धर्म को नहीं बढ़ाते हो। तुम श्रीमत पर सभी को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हो। यह और कोई बता न सके। मनुष्य समझते हैं यह कोई नया धर्म स्थापन कर रहे हैं मुझे पड़ते हैं। इसलिये बिगड़ते हैं। जो भी हैं सभी समझते हैं यह कोई धर्म स्थापन कर रहे हैं या ईश्वर को पाने लिये कोई नई संस्था बनाई है। जो तुम्हारी बुधि में है वह और कोई की बुधि में नहीं है। उनको तो यह पता ही नहीं है दुनिया खत्म हो रही है। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो हम अपना राज्य-भाग स्थापन कर रहे हैं। विकारों पर जीत कैसे पानी है यह कोई भी सिखलाते नहीं तो सभी को नई बात लगती है। तुम्हारी बात ही अलग है। इस पुरानी दुनिया से जाना है नई दुनिया स्थापन हो रही है यह कोई की भी बुधि में नहीं है। 5 विकारों को जीतने बड़ी मेहनत लगती है। यह भूत कोई जल्दी थोड़ेही निकलती है काम तो है प्राईवेट। क्रोध प्राईवेट नहीं झट भूं2 करने लग पड़ते हैं। तुम बच्चों को समझाया जाता है जिनमें क्रोध है वह हैं असुर। उनकी बात सुनो नहीं। डैविल डैविल से टां2 करेंगे। उस समय यह पता नहीं पड़ेगा हम सभी असुर हैं। ऐसे2 समय किनारा कर लेना चाहिए। कोई चीज न मिलती है तो भूं2 करते हैं। लोभ में भी भूं2 करते हैं। कोई आशा पूरी न होती है तो भूं2 करते। यहां ऐसी भूं2 न करनी चाहिए। लक्षण भी अच्छे चाहिए। पिछाड़ी में सुधरने को है। जल्दी नहीं सुधरती है। देवी गुण वाले बहुत मीठे शांत रहेंगे। क्रोध आता है तो अपने को भी दुखी करेंगे और औरों को भी दुःखी करेंगे। कोई चीज न मिले तो सीनीयर के पास आना चाहिए। हरेक बात में युक्ति से चलना होता है। वास्तव में कोई किसको गाली भी दे नहीं सकते। किसको गाली देना भी अपने हाथ में ला उठाते हैं। ला अपने हाथ में नहीं लेना है। सबसे लापफुल तो बाप है। आपस में लड़ने झगड़ने से तो आओ बाप के पास। बाबा पूछेंगे क्या चाहिए भूत तो सभी हैं। कुछ न कुछ हरेक में है। तो अपने देहअभिमान में आकर सभी भूल जाते हैं। बाप ने समझाया है सिमर2 सुख पाओ। तमोप्रधान से स्वर्ग चढ़ते जाते हो। यह भी बाप से शिक्षा मिलती है। अति दुःख से अति सुख में जाने को। कम याद करेंगे तो कम मेनर्स आवेंगे। हरेक समझते हैं हमारे में कहां तक मेनर्स हैं। बाबा भी समझाते हैं अपनी मेहनत बढ़ाते जाओ। कोई में क्रोध है तो कोई में क्या है सभी मालूम तो पड़ता है। सभी धर्म तमोप्रधान बन हुये हैं। यह बात है सारी दुनिया के विस्था। ड्रामा ऐसा बना हुआ है। जो तुम खुद हो यह सभी खत्म हो जावेंगे। राम गयो रावण गयो... तुम तो कुछ नहीं हो। बाकी तुम रहने वाले हो। तुमसे दुश्मनी रखते हैं। कहते हैं यह तो विनाश2 ही कहती रहती हैं। तुम तो लिखते हो इस विनाश से विश्व में शांति होनी है। मनुष्यों की पत्थर बुधि है। उनसे झगड़ा आदि नहीं करो। सिर्फ बोलो बाप का हुआ सभी भाई2 हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो। भक्तिमार्ग में भी कहते हैं बाबा आप आवेंगे तो आप आकर राज्य स्थापन करेंगे तो हम भी नई दु0 के मालिक बनेंगे। बोलो हमने शास्त्र तो पढ़ी अभी बाप कहते हैं सिर्फ मामेकं याद करो। तो हमको बाप का ही मानना पड़ता है। शिवजयन्ति भी मनाते हैं। तुम्हारे पास कितने आते हैं। कोई तो झट बहुत अच्छा सच्चा ओपिनीयन भी लिखते हैं। कोई रेशम पर कोई पर्ची। कोई में झगड़ा आदि न करना है। बहुत प्यार से कहना है शिव बाबा ब्रह्मातन द्वारा कहते हैं मन्मनाभव। बिल्कुल सीधा तीर है। बाप कहते हैं मेरे साथ योग रखो तो तुम ऊंचे ते ऊंचे बन जावेंगे। जास्ती तिक2 न करो। बाप तो कहते तुमको गुह्य2 बातें सुनाता हूं। जो नहीं समझ सकते हैं वह कहते रोज2 एक ही बात सुनाते हैं। तो छोड़ देते। कोई2 की क्रिमनल इश्क आई ऐसी है जो छोड़ेंगे ही नहीं। मर जावेंगे तभी नहीं छूटेगी। तो फिर मायाके तरफ चले जावेंगे। तुम हरेक के चलन से समझ सकते हो। बाबा भी समझ सकते हैं। बहुत हैं जो अपनी गफलत बताते हैं। बाबा की नालेज ऐसी है जो वह कर कार डे... बाप को याद करते रहो। मीठा बनते जाओ। इसमें सहनशीलता बहुत चाहिए। सहन न करने से झटभूं2 करने लग पड़ते हैं। एक ही बात समझाकर छोड़ दो। गाड फादर जो सभी को बाप हकहते हैं मेरे से वरसा लेना है तो मुझे याद करो। सभी तो समझाने वाली एक जैसी नहीं है। कईयों को बात करने का भी अक्ल नहीं। देह अभिमान इतना कड़ा है। बाप को याद करो तो देह अभिमान कम हो जावे। विजय इसमें ही है। अच्छा गुडनाईट